(७८१)

तुम मत जानो बिछुरयो, सज्जन प्रीत घटाय;
बेपारीको ब्याज ज्युं, दिन दिन दुंन बडाय ।

(७८२)

घेहेरी प्रीत सुज्जानकी, बढत बढत बढ जाय;
ओछी प्रीत अजानकी, घटत घटत घट जाय ।

(७८३)

कबीर सुरत मित्रकी, दिन दिन चहे चित्त;
तन ना मिले तो क्या भया, मन तो मिलना नित ?

(७८४)

जो मिले सो प्रीतमे, धाय मिले सब कोय;
मनहि मन मिला बिना, देह मिले क्या होय ।

(७८५)

सो कोष सज्जन बसें, जानुं हिरदा मजार;
कुस्नेहि घर आंगने, जानुं दरिया पार ।

(७८६)

जळमें बसें कमोदनी, चंदा बसें आकाश;
जो जाके हिरदे बसें, सो ताहिके पास ।

(७८७)

स्वार्थका सब कोइ सगा, जुग साराहि जान;
बिन स्वार्थ सगपन करे, सो हरि प्रीत पिछान ।

(७८८)

जो कोइ करे सो स्वार्थी, अरसपरस गुन लेत;
बिन किया करे सो सुरवा, परमारथके हेत ।

(७८९)

सुखके संग हय स्वार्थी, दुःखमे रहे जो दूर;
कहे कबीर परमारथी, दुःख सुख सदा हजूर ।

(७९०)

प्रीत तारो किजीये, जाकी जात मजीठ;
प्रीत कुंसब न किजीये, भिड पडे दे पीठ ।

(७९१)

सज्जन अैसा चाहिये, दुभ्या दे नहि दोष;
खेदिया भेदिया दुःख दिया, मघुरा बोले बोल ।

(७९२)

सज्जन स्नेहि बहोत हय, सुखमे मिले अनेक;
बिपत पडे दुःख बातिये, सो लाखनमे एक ।

(७९३)

बलिहारी उस फुलकी, जामे दुनी बास;
अपना तनमन सोंपके, हो गया पुराना घास ।

(७९४)

नेह निभावन कठन हय, सबसे निभत नाहि;
चढवो मोम तुरंगपे, चलवो पावक माहि ।

(७९५)

प्रेम प्रीतसे जो मिले, ताको मिलीये धाय;
कपट राखके जो मिले, तासे मिले बलाय ।

(७९६)

दिलपर दिलसें जो मिले, जा दिल दगा न होय;
सो दिल कबू न बिसरे, कोढीक करो जो कोय ।

(७९७)

प्रीतम प्रीत बढायके, दुर देश मत जाय;
हमतुम एक नगर बसें, जो भिख माग नित पाय ।

(७९८)

एक द्रष्ट दा नैन हय, एक शब्द दो कान;
हम तुम एक पटंतरा, दो घटमे एक प्रान ।

<u>इश्वरी प्रेमके बारे में</u> (७९९)

कठन गली हय प्रेमकी, हिरदे आवे राम;
रहि सनक आदि मघन भये, अैसा हय हरिनाम ।

(८००)

प्रेमी ढुंढत में फिरुं, प्रेमी मिले न कोय;
प्रेमीको प्रेमी मिले, तब भक्ति द्रढ होय ।

(८०१)

जाके हिरदे प्रेम बसे, ताको सब जृग दास;
प्रेम बिना भक्ति करे, मांनो कांटा घास ।

(८०२)

प्रेम छुपाया न छुपे, जा घट उमग्यां होय;
जदिप मूख बोले नहि, नैन देत हय रोय ।

(८०३)

घडि चढ घडि उतरे, वोह तो प्रेम न होय;
अघट प्रेम हिरदे बसे, प्रेम कहिये सोय ।

(८०४)

जा घट प्रेम न संचरे, सो घट जानुं मसान;
जैसे खाल लुहारकी, श्वास लेत बिन प्रांन ।

(८०५)

पिया चाहे प्रेम रस, राखा चाहे मान;
दो खंड एक मेंनमे, देखा सुना न कान ।

(८०६)

प्रेम पिलाया सो पिवे, शिश दक्षिता दे;
लोभि शिश न दे शके, नाम प्रेमका लेय ।

(८०७)

प्रेम बिना धिरज नहि, बिरहे बिना बैराग;
सद्‌गुरु बिना मिटे नहि, मन मनसाका दाघ ।

(८०८)

जहां प्रेम तहां नेम नहि, तहां न बुद्धि वेहवार;
प्रेम मगन जब मन भया, कोन पुछे तिथी वार ?

(८०९)

प्रेम बिना नहि भेष कछु, नाहक करे सो बाद;
प्रेम भाव जबलग नहि, तबलग भेष सब बाद ।

(८१०)

प्रेम जगाया विरहको, विरह जगाये पिव;
पिव जगाये जीवको, होय पिव होइ जीव ।

(८११)

जबलग नाता जातका, तबलग भगत न होय;
नाता तोरे हरि भजे, भगत कहावे सोय ।

<u>आप - भोग के बारे में</u> (८१२)

सुरे चढे संग्रामको, बानां पहेन अनेक;
सांइयां के मुख सामने, मुवाज कोइ एक ।

(८१३)

सुरा सोहि जानीये, लडे धनीके हेत;
पुरजा पुरजा हो रहे, तोउ न छांडे खेत ।

(८१४)

खेत न छांडे सुरवा, झुंजे दोउ दल मांहि;
आशा जीवन मरनकी, मनमे आने नहि ।

(८१५)

भागे भला न होयगी, भों भारी घर दूर;
शिर साहेबको सोंपते, सोंच काहेको सूर ।

(८१६)

जो शिर सोंपा सांइको, वोह शिर भया सनाथ;
कबीर दे उबरन भयें, जाका ताके हाथ ।

(८१७)

जो मुवा हरी हेतमे, कोइ न बुजे सार;
हरिजन हरिसा हो रहा, माया रही शिर मार ।

(८१८)

कबीर ! या घर प्रेमका, खालाका घर नांहि;
शिश उतारे हाथसुं, सो घर पेंठे घर मांहि ।

(८१९)

सुरा सोहि जानिये, पांव न पिछे पेंख,
आगे चला पिछा फिरे, ताका मुख न देख ।

(८२०)

घायलकी गत ओर हय, ओरनकी गत ओर;
बांनज लागा प्रेमका, रहा कबीरा ठोर ।

(८२१)

सुराका तो दल नहि, चंदनका बन नांहि;
सब समूद्र मोती नहि, युं हरिजन जग मांहि ।

(८२२)

सारा शुरा बहु मिले, घायल मिले न कोय;
घायलकु घायल मिले, तब (राम) भक्ति द्रढ होय ।

(८२३)

करदी धारा रामकी, काचा टिके न कोय;
शिर सोंपे सिधा लरे, शुरा कहिये सोय ।

(८२४)

पहेले दाता में भया, हरिको सोंपा शिश;
पिछे दाता हरि भया, काह करुं बक्षिश ?

(८२५)

देखा देखीसुं चढे, मर्म न जाने कोय;
सांईयां कारण शिश दे, शुरा जाणुं सोय ।

(८२६)

शिर सट्टेका खेल हय, सो शुरनका काम;
पहेल्ले मरनाज आगमे, पिछे कहेना राम ।

(८२७)

सांईयां शीत न पाइये, बातां मिले न कोय;
कबीर सोदा रामसुं, शिर बिन कबू न होय ।

(८२८)

हरिका गुन कठन हय, ऊंचा बहु अकथ;
शिर कोटी पग तल धरे, तब जा पहोंचे हथ ।

(८२९)

उंचा तरवर गगन फळ, पंखी मुवा सब जूर;
बहोत शियांने पच गये, फळ लागो पर दूर ।

(८३०)

दूर भया तो क्या भया, शिर दे नेडा होय;
जबलग शिर सोंपे नहि, चख शके न कोय ।

(८३१)

ए रन मांहि पेंठ कर, पिछे रहे न शुर;
साहेबके सनमूख रहे, धर दे शिश हजूर ।

(८३२)

लागी लागी कहा करो, लागी नहि लगार;
लागी तबहि जानीये, निकस जाय दो सार ।

(८३३)

काया मोड कमान कर, पांच तत कर तांन;
मारो तो मन मरघला, नहि तो मीथ्या जान ।

(८३४)

शिश उतारी भुं धरे, उपर धर दे पाय;
दास कबीरा युं कहे, एसा हो तब आय ।

(८३५)

जब लग धडपर शिश हय, शुरा कहिये नाहि;
माथां तुटी धड लडे, शुरा कहिये ताहि ।

(८३६)

कबीर साचा सुरवा, कब न पहेरे लोह;
झुजनके बंध खोलके, छांडे तनका मोह ।

(८३७)

कठनाइ कछू नहि, जो शिर बदले लेह;
राम नाम नहि छांडीये, जो शिर करवत देय ।

<u>बिरहा के बारे में</u> (८३८)

बिरहा बुरा हय जन कहे, बिरहा हय सुलतान;
जा घट हरि बिरहा नहि, सो घट सदा मसान ।

(८३९)

बिरहा आया दुधसा, कडवा लागा काम;
काया लागी काळसि, मिठो लागो राम ।

(८४०)

जा तनमे बिरहा बसे, ता तन लोहु न मांस;
इतना बहोत हि उबरा, हाड चाम ओर श्वास ।

(८४१)

बिरहा कुंडी भुंड पडे, दरशन कारन राम;
जीवत दरशन ना दियो, मुवेका नहि काम ।

(८४२)

मुवे पिछे मत मिलो, कहे कबीरा राम;
लोहा माटी मिल गया, तब पारसका क्या काम ?

(८४३)

गलुं तुमारे नाममे, ज्युं पानीमे लोन;
अेसी बिरहा पठायके, नित दुखवे कोन ?

(८४४)

देखतहि सब दिन गया, निशबी निरखत जाय;
बिरहन पियु पावे नहि, जीवडा तलखे जाय ।

(८४५)

नेना हमारे जल गये, छिन छिन लोटे तुंज;
न तुं मिले में सुखी, अैसी बेदना मुज ।

(८४६)

इस तनका दीवला करुं, बाती डालुं जीव;
लोहि सींचु तेल ज्युं, कब मुख पावुं पीव ।

(८४७)

मांस गया पिंजर रहा, ताको न लागे काग;
सांइ अजहु न संभार्या, मंद हमारा भाग ।

(८४८)

कबीर ! हसना दुर कर, रोवन पर धर चित;
बिन रोवे क्युं पाइये, पियु पुरबला मित ।

(८४९)

हंसु तो दुःख न बिसरे, रोवुं तो बळ घट जाय;
मनका मनमे बिसरना, ज्युं धुन काष्टकु खाय ।

(८५०)

पहेले अगन बीरहेका, पिछे प्रेम प्यास;
कहे कबीर तब जानीये, राम मिलनकी आस ।

(८५१)

जीतना गुनाह में कीया, तितना करे न कोय;
काला हुवा मुखडा, धो न शकुं रोय ।

(८५२)

बिरहेनी मर जायेगी, आतुर हाल शरीर;
बेगी दर्शन दिजीये, तो जीवे दास कबीर ।

(८५३)

बिरहेनी देत संदेशो, सुनो हमारे सुजान;
बेगी तुम आ मीलो, नहि तो तज्या प्रान ।

(८५४)

सांइया तुम मत जानियो, के प्रीत घटे कवचित;
मरुं तो तुम सुमरन मरुं, जीयुं तो सुमरुं नित ।

(८५५)

में दिवानी रामकी, दिवानी कहे सब कोय;
मोहे दिवाना आ मिले, तब बंदी चंगी होय ।

(८५६)

पपैया पियु पियु करे, निशदीन प्रेमकी आश;
पंखी वीरह ना छांडहि, तो क्युं छांडे निज दास ।

(८५७)

आठ पोहोर चोसठ घडी, लागा रहे अनुराग;
हिरदे पलक ना बिसरे, तब साचा बेराग ।

(८५८)

ज्युं मेरा मन तुजमें, युं तेरा मुजमे होय;
ताला लोहा युं मिले, सांध न लखे कोय ।

(८५९)

कफ काया चित चकमका, झालि वारंवार;
तिन वार धुंवा उठे, चोठ परे अंगार ।

(८६०)

पानीकी मछली, चढी परबते गइ;
अग्नि पिया पुष्ट भइ, जल पिया मर गइ ।

(८६१)

समुद्र लागी आग हय, नदी लज कोयला भइ;
जाग कबीरा देख ले, मछींया तरवर चढ गइ ।

(८६२)

सबको बिरहन डुंबली, तुं क्युं बिरहन लाल !
परचा पाया पियुका, युं हम भाइ नेहाल ।

(८६३)

साचा पाया सुख उपना, दिल दरिया भरपुर;
सकळ अंधेरा मिट गया, जब सांइ मिला हजुर ।

(८६४)

कबीर, चल जाय था, पुछ लिया एक नाम;
चलता चलता तहां गया, गाम नाम नहीं ठाम ।

(८६५)

कौतक देखा देह बिन, रवि ससि बिन उजास;
साहेब सेवामें रहे, बेपरवाहि दास ।

(८६६)

धरति गगन पवन नहि, नहि तुम्बा नहि तार;
तब हरिके हरिजन था, कहे कबीर बिचार ।

(८६७)

देखा एक अगम धनी, महिमा कही न जाय;
तेज पुंज प्रगट धनी, मनमे रहा समाय ।

(८६८)

दिपक देखा ज्ञानका, पेंखा अपरम देव;
चार वेदको गम नहि, तहां कबीरा सेव ।

(८६९)

बैकुन्थ उपर बसत हय, मेरा साहेब सोहे;
जाके रुप न रेख होय, सो अंतर मिल्या मोहे ।

(८७०)

हरि संपत शितळ भया, मिटा मोह तन ताप;
निश बासुर सुख उपजा, जब अंतर प्रगट आप ।

(८७१)

कबीर ! दिल साबेत भया, हरि बेठा दरघे आय;
जीव ब्रह्म मिला हुवा, अब जीव कहां न जाय ।

(८७२)

मन सरोवर सुभक जल, हंसा केल कराय;
मुगटा फळ निशदिन चुंगे, अब उडी अंत ने जाय ।

(८७३)

कबीर हमे जब गावते, तब हरि जानिया नाहि;
अब हम दिलमें पेंखीया, तब गावेकु कछु नाहि ।

(८७४)

कुदरकत पाया खबरसु, सद्गुरु दिया बताय;
भमरा वलभा कमलसु, अब उडी अंत न जाय ।

(८७५)

हम वासी वहां देशके, जहां अविनाशीकी आन;
सुख दुःख तहां ब्यापे नहि, सब दिन एक समान ।

(८७६)

हम वासी वहां देशके, जहां बारो मास बिलास;
प्रेम झरे बिकसे कवल, तेज पुंज प्रकाश ।

(८७७)

हम वासी वहां देशके, जात वरण कुल नाहि;
शब्द मिलावा हो रहा, पर देह मिलावा नाहि ।

(८७८)

हम वासी वहां देशके, रुप वरन कछु नाहि;
सेन मिलावा हो रहा, शब्द मिलावा नाहि ।

(८७९)

हम वासी वहां देशके, पींड ब्रह्मन कछु नाहि;
आप पर दोउ बिसरा, सेन मिलावा नाहि ।

(८८०)

तेज पुंजका देहरा, ओर तेज पुंजका देव;
तेज पुंज झरमर झरे, तहां कबीरा सेव ।

(८८१)

सुन्य मंडळमें घर गया, बाजा शब्द रसाल;
रोम रोम दिपक झरे, प्रगटा आप दयाल ।

(८८२)

अगम अगोचर गम नहि, जहां झिलमिले जोत;
तहां कबीरा रम रहा, पाप पुन नहि छोत ।

(८८३)

पार ब्रह्म के तेजको, कैसा हय अनुमान;
कहेवेकी शोभा नाहि, देखा हि प्रमान ।

(८८४)

मन मधुर पिकर भया, किया निरंतर बास;
कमलज फुल निर बना, कोइ पेंखे निज दास ।

(८८५)

खाला नाला हिम जळ, सो फिर पानी होय;
जा पानी ते मोती भया, सो फिर निर न होय ।

(८८६)

कबीर, मारग अगम हय, सब मुनीजन बेठे ठाक;
तहां कबीरा चल गया, ग्रही सद्गुरुकी शाख ।

(८८७)

सुर नर ठाके मुनीजनां, तहां कोइ न जाय;
मोटा भाग कबीरका, तहां रहा लोलाय ।

(८८८)

पानी हिंसे पातला, धुंवा हिंसे जीन;
पवन बिच उतावळा, सो दोस्त कबीरे कीन ।

(८८९)

देखो करम कबीरका, कछु पूरबला लेख;
जाका मेहेल न मुनी लहे, सो दोस्त किया अलेख ।

(८९०)

पींजर प्रेम प्रकाशया, हिरे लिया उजास;
चंद्र सुर्यको गम नहि, तहां दरशन पावे दास ।

(८९१)

मन लागा उन मुनिसुं, गगन पहोंता जाय;
चंद्र बिहुंना चांदनां, जहां अलख निरंजन राय ।

(८९२)

मन लागा उन मुनिसें, उन मूनि मनहि बिलग;
लोन बिल गयो पानीमे, पानी लोन बिलग ।

(८९३)

पानी केरा हिम हुवा, हिम गया बहेलाय;
कबीर जो था सो भला, अब कछु कहां न जाय ।

(८९४)

पांच सही पियु पियु करे, छठ्ठा सुमरे मन;
आइ सुरत कबीरकी, पाया राम रतन ।

(८९५)

थापन पाई मन धीर भया, सद्गुरु दिनी धीर;
कबीरे हिरा बनझीया, मान सरोवर तीर ।

(८९६)

पंखी उडा गगनकुं, धड रहा परदेश;
पानी पिवे चोंच बिन, भुल गया वां देश ।

(८९७)

देखन सरीखी बात हय, कहेन सरीखी नाहि;
अैसा अदभूत समजके, समज रहे मन मांहि ।

(८९८)

बिन धरतीका गाम हय, बिन पंथका देश;
बिन पिंकडा पुरुष हय, कहे कबीर उपदेश ।

(८९९)

में था तब हरि नाहि था, अब हरि हय में नाहि;
सकळ अंधेरा मिट गया, दिपक देखा मांहि ।

(९००)

करतम करात ना हता, ना हता हाट न पाट;
जा दिन कबीरा रामजन, देखा औघट घाट ।

(९०१)

गुन इंद्रि सेहेजे गइ, सद्‌गुरु भये सहाय;
घटमें ब्रह्म बिराज्या, बक बक मरे बलाय ।

(९०२)

हस कर कोइना पाइयां, जीने पाया सो रोय;
हंसनमें जो हरि मिले, तो कोन दोहागन होय ?

(९०३)

हांसी खेले हरि मिले, तो कोण सहे खुरसांन ?
काम क्रोध तृष्णा तजे, ताहि मिले भगवान ।

(९०४)

कबीर, हदका गुरु हय, बेहदका गुरु नाहि;
बेहद आपे उपजे, अनुभवके घर मांहि ।

(९०५)

निराधार सो सार हय, निराकार निज रुप;
निश्चिल जाके नाम हय, अैसा तत्व अनुप ।

(९०६)

सुरतमे मुरत बसे, मुरतमे एक तत;
ता तत तत बिचारया, तत्व् तत्व् सो तत ।